महामत कहे ए मोमिनों, करूं मूल सरूप बरनन।
मेहेर करी मासूक ने, लीजो रूह के अन्तस्करन।। ४२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैं श्री राजजी महाराज के मूल स्वरूप का वर्णन करती हूं। वर्णन करने की मेहर माशूक श्री राजजी महाराज ने मुझे दी है, जिससे मैं वर्णन करती हूं। तुम अन्तःकरण में धारण करना।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। ५३२ ।।

श्री राजजी को सिनगार दूसरो

मंगला चरण

अर्स तुमारा मेरा दिल है, तुम आए करो आराम।
सेज बिछाई रुच रुच के, एही तुमारा विश्राम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे धनी श्री राजजी महाराज! आपका अर्श मेरा दिल है। आप आकर अपने अर्श में आराम करें। मैंने हृदय में बड़ी चाहनाओं के साथ आपके लिए सुन्दर सेज बिछाई है। इसमें आकर आप विश्राम करें।

अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में सब बिसात।
निमख न्यारी क्यों होए सके, रूह निसबत हक जात।। २ ।।

मोमिनों का दिल ही आपका अर्श है। जहां सब सुख सुविधाएं हैं। यह मोमिन आपकी ही अंगना हैं, इसलिए एक क्षण के लिए आपसे अलग नहीं हो सकतीं।

इस्क सुराही ले हाथ में, पिलाओ आठों जाम।
अपनी अंगना जो अर्स की, ताए दीजे अपनों ताम।। ३ ।।

अपने इश्क से लबरेज (लबालब भरी) दिल की सुराही को हाथ में लेकर रात-दिन अपने मोमिनों को इश्क की शराब पिलाइए और इन्हें अपने इश्क की पूरी खुराक दीजिए।

इलम दिया आए अपना, भेजी साहेदी अल्ला कलाम।
रूहें त्रिखावंती हक की, सो चाहें धनी प्रेम काम।। ४ ।।

आपने स्वयं आकर अपनी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी दी और रसूल साहब के द्वारा अपने आने की गवाही दिलाई। रूहें आपके प्रेम की प्यासी थीं और आपके प्रेम को ही चाह रही थीं।

फुरमान ल्याया दूसरा, जाको सुकजी नाम।
दई तारतम ग्वाही ब्रह्मसृष्ट की, जो उतरी अव्वल से धाम।। ५ ।।

दूसरी गवाही शुकदेवजी भागवत के द्वारा लाए, जिसमें लिखा है कि श्री अक्षरातीत पारब्रह्म अपने परमधाम से अपनी आत्माओं के साथ कलियुग में आएंगे और अपने तारतम ज्ञान से सबको पहचान कराएंगे।

खिलवत खाना अर्स का, बैठे बीच तखत स्यामा स्याम।
मस्ती दीजे अपनी, ज्यों गलित होऊं याही ठाम।। ६ ।।

परमधाम के खिलवतखाना (मूल-मिलावा) में तख्त पर श्री राजश्यामाजी विराजमान हैं। हे श्री राजजी महाराज! आप अपने इश्क की ऐसी मस्ती दे दो जिससे मैं श्री राजजी श्री श्यामाजी के ही चरण कमलों में गर्क हो जाऊं।

Nijanand App

तुम लिख्या फुरमान में, हक अर्स मोमिन कलूब।
सो सुकन पालो अपना, तुम हो मेरे मेहेबूब।।७।।

आपने कुरान में लिखा है कि आपका अर्श मोमिनों का दिल है। हे मेरे लाड़ले धनी! तुम अपने उन वचनों को पूरा करो।

और भी लिख्या समनून को, हक दोस्ती में पातसाह।
सो कौल पालो अपना, मैं देखूं मेहेबूब की राह।।८।।

आपने कुरान में लिखा है कि समनून के साथ मेरी पक्की दोस्ती है (समनून एक बड़ा त्यागी और प्रतापी राजा था, जिसने जनता की सेवा जीवन भर कष्ट ही सहन करके की। यही किस्सा वक्त आखिरत को श्री प्राणनाथजी के लिए आया है, जिन्होंने अपनी रूहों के वास्ते न सहने योग्य कष्ट उठाए और अपने मोमिन को माया के बन्ध से छुड़ाया। यही वचन उन्होंने मोमिनों को परमधाम से उतरते समय कहे थे)। हे मेरे धनी! अब आप उन वचनों को पूरा करके अपनी दोस्ती निभाओ और मेरे हृदय में आकर विराजमान हो जाओ। मैं आपकी राह में पलकें बिछाए बैठी हूं।

कहूं अबलों जाहेर ना हुई, अर्स बका हक सूरत।
हिरदे आओ तो कहूं, इत बैठो बीच तखत।।९।।

आज दिन तक अखण्ड परमधाम की और श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान किसी को नहीं थी। अब मेरे हृदय में सिंहासन पर आकर विराजमान हो तो मैं इन दोनों छिपे भेदों के रहस्यों को जाहिर करूं।

ए वजूद न खूबी ख्वाब की, ए कदम हक बका के।
ढूंढ़्या बुजरकों इमदाए से, इत जाहेर न हुए कबूं ए।।१०।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे साथजी! यह वर्णन सपने की दुनियां के तन का नहीं है। यह तो अखण्ड अक्षरातीत धाम के धनी के चरण कमलों का वर्णन है, जिसे दुनियां के बड़े-बड़े लोगों ने ढूंढ़ा, परन्तु किसी को इनका पता नहीं चला।

उज्जल लाल तली पांउं की, रंग रस भरे कदम।
छब सलूकी अंग अर्स की, रूह से छूटे क्यों दम।।११।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमलों की तली उज्ज्वल लाल रंग की है। यह रंग अखण्ड परमधाम के अंग चरण कमल की छवि की सलूकी आत्मा से एक क्षण के लिए भी नहीं छूटती।

मिहीं लीकें चरनों तली, रूह के हिरदे से छूटत नाहें।
ए निसबत भई अर्स की, लिखी रूह के ताले माहें।।१२।।

चरण कमलों की तली की बारीक रेखाएं रूहों के दिल से नहीं निकल सकतीं। अंगना होने के कारण रूहों का इस पर अधिकार है।

नख अंगूठे अंगुरियां, सिफत न पोहोंचे सुकन।
आसमान जिमी के बीच में, रूह याही में देखे रोसन।।१३।।

इन चरण कमलों के अंगूठे और नाखून की महिमा वर्णन करने के लिए यहां के वचन नहीं पहुंचते। आसमान और जमीन के बीच रूहें इन्हीं चरण कमलों में मग्न रहती हैं।

Nijanand App

एक छोटे नख की रोसनी, ऐसा तिन का नूर।
आसमान जिमी के बीच में, जिमी जरे जरा भई सब सूर।। १४ ।।

परमधाम के एक छोटे से नख की रोशनी आसमान और जमीन के बीच में समाती नहीं है। उसके तेज से परमधाम के कण-कण सूर्य के समान चमकते हैं।

देख सलूकी अंगूठों, और अंगुरियों सलूकी।
उतरती छोटी छोटेरी, जो हिरदे में छबि फबी।। १५ ।।

अंगूठा और उंगलियों की बनावट ऊपर से नीचे की ओर देखकर इनकी सुन्दर शोभा हृदय में अंकित हो जाती है।

लाल नरम उज्जल अंगुरी, फना टांकन घूंटी काड़ों।
आठों जाम रस बका, पोहोंचे रूह के तालू मों।। १६ ।।

उंगलियां लाल रंग की नर्म-नर्म हैं। पंजा, टांकन, घूंटी, काड़ों की शोभा रूहें रात-दिन लेती हैं।

लाल लांकें लाल एड़ियां, पांउं तली अति उज्जल।
ए पांउं बसत जिन हैयड़े, सोई आसिक दिल।। १७ ।।

तली की गहराई तथा एड़ी लाल रंग की है। तली का भाग अति उज्ज्वल है। ऐसे चरण कमल जिसके हृदय में आ जाते हैं, वही रूहें आशिक कहलाती हैं।

बसत सुखाले नरमाई में, आसमान लग रोसन।
ए पांउं प्यारे मासूक के, जो कोई आसिक मोमिन।। १८ ।।

यह चरण कमल अति नर्म और सुखदाई हैं। इनके तेज की रोशनी आकाश तक फैली है। रूह मोमिनों को अपने माशूक श्री राजजी महाराज के चरण कमल अति प्यारे हैं।

आसिक बसत अर्स तले, या बसे अर्स के माहें।
ए खुसबोए मस्ती अर्स की, निसदिन पीवे ताहें।। १९ ।।

आशिक रूह इन चरणों के तले या परमधाम में रहती हैं। इस तरह से इश्क की खुशबू में नित्य मस्त रहती हैं।

सुन्दर सलूकी छब सोभित, रंग रस प्यार भरे।
सोई मोमिन अर्स दिल, जित इन हकें कदम धरे।। २० ।।

चरण कमल की बनावट (छवि) अति सुन्दर है। यह रंग, रस और प्यार से भरे शोभा देते हैं। ऐसे चरण कमल जिसके हृदय में आ जाते हैं, उसी का दिल अर्श है और वही मोमिन है।

ए सुख देत अर्स के, कोई नाहीं निमूना इन।
ए सुख जानें अरवा अर्स की, निसबत हकसों जिन।। २१ ।।

यह चरण कमल ही मोमिनों को अर्श के सुख देते हैं। जिसका दुनियां में कोई नमूना नहीं है। इस सुख को अर्श की अरवाहें जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, ही जानती हैं।

Nijanand App

रूहें इस्क मांगें धनी पे, पकड़ धनी के कदम।
जो छोड़े इन कदम को, सो क्यों कहिए आसिक खसम।। २२ ।।

रूहें श्री राजजी महाराज से उनके चरण कमल पकड़कर इश्क की मांग करती हैं। जो इन चरण कमलों से जुदा हो जाता है वह अर्श की ब्रह्मसृष्टि नहीं है।

नरम तली लाल उज्जल, आसिक एही जीवन।
धनी जिन छोड़ाइयो कदम, जाहेर या बातन।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमलों की तली नर्म और लाल है। यही मोमिनों का जीवन है, इसलिए हे धनी! इन चरण कमलों को जाहिरी या बातूनी रूप से रूहों से मत छुड़ाना।

प्यारे कदम राखों छाती मिने, और राखों नैनों पर।
सिर ऊपर लिए फिरों, बैठो दिल को अर्स कर।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज के ऐसे चरण कमलों को अपने नैनों में और छाती से चिपकाकर या सिर पर लिए घूमूं, इसलिए हे धनी! मेरे दिल को अर्श कर बैठो। यही मेरी इच्छा है।

तखत धर्‍या हकें दिल में, राखूं दिल के बीच नैनन।
तिन नैनों बीच नैना रूह के, राखों तिन नैनों बीच तारन।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज मेरे दिल को अपना अर्श बनाकर विराजमान हो गए। अब उन्हें मैं अपने हृदय के नैनों में बसाकर रखूंगी। इन नयनों के बीच में अपनी आत्मा के नैनों के तारे में छिपाकर रखूं।

तिन तारों बीच जो पुतली, तिन पुतलियों के नैनों माहें।
राखूं तिन नैनों बीच छिपाए के, कहूं जाने न देऊं क्याहें।। २६ ।।

उन आत्मा की आंखों में जो पुतलियां हैं और पुतलियों में जो नैन हैं, उन नैनों के बीच इन चरण कमलों को छिपा लूं और कहीं जाने न दूं।

जाथें चरन जुदे होंए, सो आसिक खोले क्यों नैन।
ए नैन कायम नूरजमाल के, जासों आसिक पावे सुख चैन।। २७ ।।

जिन आंखों के खोलने से चरण जुदा हो जाएं उन आंखों को आशिक रूह क्यों खोलेगी? यह श्री राजजी महाराज की अखण्ड नजर है जिससे रूहों को चैन व करार होता है।

एक अंग छोड़ दूजे अंग को, क्यों आसिक लेने जाए।
ए कदम छोड़े मासूक के, सो आसिक क्यों केहेलाए।। २८ ।।

एक अंग को छोड़कर दूसरे अंग को देखने की चाहना करना आशिक का काम नहीं है। जो श्री राजजी महाराज के चरणों को छोड़ती है वह आशिक कैसे हो सकती है?

एक रूह लगी एक अंग को, सो क्यों पकड़े अंग दोए।
मासूक अंग दोऊ बराबर, क्यों छोड़े पकड़े अंग सोए।। २९ ।।

रूह जब श्री राजजी महाराज के एक अंग को देखकर उसी में गर्क हो जाती है, तो वह दूसरे अंग को नहीं देखती। श्री राजजी के तो सभी अंग बराबर सुख देने वाले हैं, इसलिए रूह अर्श के पकड़े हुए अंग को छोड़ती ही नहीं।

Nijanand App

जो कोई अंग हलका लगे, और दूजा भारी होए।
एक अंग छोड़ दूजा लेवहीं, पर आसिक न हलका कोए।। ३० ।।

परमधाम की आत्मा को श्री राजजी महाराज का कोई भी अंग हल्का या भारी नहीं लगता, इसलिए जो श्री राजजी महाराज के एक अंग को छोड़कर दूसरे अंग की चाहना करता है वह मोमिन नहीं है, क्योंकि आशिक को माशूक का कोई भी अंग हल्का नहीं लगता।

दूजा अंग आया नहीं, तो लों एक अंग क्यों छूटत।
यों और अंग ले ना सके, एकै अंग में गलित।। ३१ ।।

इस तरह से जब तक दूसरा अंग हृदय में आ नहीं जाता, तब तक पकड़ा हुआ अंग वह कैसे छोड़ेगा? इस तरह से आशिक एक अंग को छोड़कर दूसरे अंग को नहीं ले सकता। वह एक ही अंग में गर्क रहता है।

जो आसिक भूखन पकड़े, सो भी छूटे न आसिक सें।
देख भूखन हक अंग के, आसिक सुख पावे यामें।। ३२ ।।

यदि आशिक श्री राजजी महाराज के एक आभूषण को ही पकड़ ले तो वह भी उससे छूटता नहीं है। अपने धनी के आभूषण को ही देख आशिक उसी में डूबा रहता है।

हकके अंग के सुख जो, सो जड़ भी छोड़े नाहें।
तो क्यों छोड़े अरवा अर्स की, हक अंग आया हिरदे माहें।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग के सुख को परमधाम की जड़ वस्तुएं भी नहीं छोड़तीं, तो जो परमधाम की रूहें हैं और जिनके दिल में श्री राजजी के चरण कमल आ गए हैं, वह कैसे उन चरणों को छोड़ सकते हैं?

हेम नंग सब चेतन, अर्स जिमी जड़ ना कोए।
दिल चाह्या होत सब चीज का, चीज एकै से सब होए।। ३४ ।।

सोना हो या नग, परमधाम के सब जड़ पदार्थ भी चेतन हैं। सभी चीजें दिल के चाहे अनुसार एक जैसी ही लगती हैं। वैसे ही एक चीज अनेक रूप धारण कर लेती है।

सब रंग गुन एक चीज में, नरम जोत खुसबोए।
सब गुन रखे हक वास्ते, सुख लेवें हक का सोए।।३५।।

परमधाम की एक ही चीज में सभी रंग, गुण, नरमाई, तेज और खुशबू सब श्री राजजी महाराज के वास्ते ही अपना-अपना गुण रखते हैं, ताकि वह श्री राजजी का सुख ले सकें।

आसिक एक अंग अटके, तिनको एह कारन।
दोऊ अंग मासूक के, किन छोड़े लेवें किन।। ३६ ।।

आशिक रूहें जो एक ही अंग में अटक जाती हैं उसका यही कारण है, क्योंकि श्री राजजी महाराज के सभी अंगों में तमाम शोभा है और गुण हैं, इसलिए किसको पकड़ें और किस को छोड़ें।

नूर बिना अंग कोई ना देख्या, और सब अंगों बरसत नूर।
अंबर में न समाए सके, इन अंगों का जहूर।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज के सब अंग नूर के हैं। नूर के बिना कोई अंग नहीं है। सब अंगों से नूर ही नूर बरसता है जो आकाश में नहीं समाता। ऐसे इन अंगों की महिमा है।

Nijanand App

एक अंग मासूक के कई रंग, तिन रंग रंग कई तरंग।
एक लेहेर पोहोंचावे उमर लग, यों छूटे न आसिक से अंग।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज के एक अंग में ही कई रंग हैं और रंग रंग में कई तरंगें हैं। आशिक रूहें अंग की एक ही लहर में अटककर अपना जीवन बिता देती हैं।

जो कदी मेहेर करें मासूक , तो दूजा अंग देवें दिल आन।
तो सुख लेवे सब अंग को, जो सब सुख देवे सुभान।। ३९ ।।

यदि श्री राजजी महाराज ही मेहर करके अपना दूसरा अंग रूह के दिल में दे दें, तो श्री राजजी महाराज के सब अंगों के सुख को रूह ले सकती है।

जो कदी आसिक खोले नैन को, पेहेले हाथों पकड़े दोऊ पाए।
ए नैन अंग नूरजमाल के, सो इन आसिक से क्यों जाए।। ४० ।।

यदि आशिक रूह अपनी आंखों को खोलकर देखें और श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को पहले पकड़ लें, तो श्री राजजी महाराज के चरण कमल रूह के नयनों से अलग नहीं हो सकते।

।। मंगला चरण सम्पूर्ण ।।

इजार जो नीली लाहि की, नेफा लाल अतलस।
नेफे बेल मोहोरी कांगरी, क्यों कहूं नंग जरी अर्स।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज की इजार हरे रंग की है, जिसका नेफा लाल अतलस का है। नेफे में बेलें और मोहरी पर कांगरी तथा जरी नगों के जड़ाव की है। इसका वर्णन कैसे करूं?

काड़ों पर पीड़ी तले, मिहीं चूड़ी सोभित इजार।
जोत करे माहें दावन, झांईं उठे झलकार।। ४२ ।।

पिंडली के नीचे के हिस्से में इजार की मोहरी में चुन्नटें शोभा देती हैं। यह इजार सफेद जामा के अन्दर से झलकती है।

इजार बंध नंग कई रंग, और कई कांगरी बेल माहें।
फूल पात कई नकस, सब्द न पोहोंचे ताहें।। ४३ ।।

इजारबन्ध में कई रंगों के नग लगे हैं और कई तरह की कांगरी, बेल, फूल और पत्तों की नक्शकारी है जिसकी शोभा को यहां के शब्द नहीं पहुंचते।

कई रंग नंग माहें रेसम, रंग नंग धागा न सूझत।
हाथ को कछू लगे नहीं, नरम जोत अतंत।। ४४ ।।

इजारबंध रेशम का है जिसमें कई तरह के रंग, नग शोभा देते हैं। धागा दिखाई नहीं देता। हाथ के छूने पर भी लगते नहीं हैं। अति नर्म है।

अतंत नाड़ी फुन्दन, जोत को नाहीं पार।
एही जानों भूल अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार।। ४५ ।।

नाड़े के फुन्दन की जोत बेशुमार है। यह अपनी बड़ी भूल है जो ऐसी शोभा को शुमार में लाकर वर्णन करता हूं।

Nijanand App

रंग नीला कह्या इजार का, कई रंग नंग इन मों।
तेज जोत जो झलकत, और कछू लगे न हाथ कों।।४६ ।।

इजार का रंग नीला कहा है। वैसे इसमें कई रंग के नग हैं। जिनकी किरणें झलकती हैं, परन्तु हाथ के छूने से पता नहीं चलता।

सब अंग पीछे कहूंगी, पेहेले कहूं पाग बांधी जे।
सिफत न पोहोंचे अंग को, तो भी कह्या चाहे रूह ए।।४७ ।।

बाकी सभी अंगों का वर्णन बाद में करूंगी। पहले पाग की शोभा जो बांध रखी है उसको बताती हूं। पाग की सिफत का यहां के शब्दों से वर्णन करना सम्भव नहीं है। फिर भी मेरी रूह वर्णन करना चाहती है।

हाथों पाग बांधी तो कहिए, जो हुकमें न होवे ए।
कई कोट पाग बनें पल में, जिन समें दिल चाहे जे।।४८ ।।

पाग हाथ से बांधी है। यह तब कहा जाए यदि वह हुकम से बांधने का काम न होता तो श्री राजजी महाराज जिस समय दिल में जैसे चाहते हैं एक पल में ही करोड़ों पागें बंध जाती हैं।

पर हकें बांधी पाग रुच के, नरम हाथों पेच फिराए।
आसिक देखे बांधते, अतंत रूह सुख पाए।।४९ ।।

परन्तु श्री राजजी महाराज ने अपने हाथों से अपनी पाग के लपेट बड़े शौक से बांधे हैं, ताकि उनकी आशिक रूहें पाग को बांधता देखकर अत्यन्त सुखी हों।

इन विध सब सिनगार, कहियत इन जुबांए।
तो कह्या फना का सब्द, बका को पोहोंचत नाहें।।५० ।।

श्री राजजी महाराज का सभी सिनगार इसी तरह का है जो मैं इस जबान से बयान कर रही हूं। वैसे इस संसार के शब्द अखण्ड की शोभा को नहीं पहुंचते।

चुप किए भी ना बने, जाको ए ताम दिया खसम।
ताथें ज्यों त्यों कह्या चाहिए, सो कहावत हक हुकम।।५१ ।।

श्री राजजी महाराज ने मुझे इतनी शक्ति दी है, इसलिए चुप नहीं रहा जाता। यह श्री राजजी महाराज का हुकम ही कहलवाता है, इसलिए जैसे-तैसे करके वर्णन करती हूं।

बांधी पाग समार के, हाथ नरम उज्जल लाल।
इन पाग की सोभा क्यों कहूं, मेरा साहेब नूरजमाल।।५२ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने लाल उज्ज्वल हाथों से पाग को बड़ी संभाल कर बांधा है। अपने नूरजमाल धनी की पाग की शोभा का मैं कैसे बयान करूं?

लाल पाग बांधी लटकती, कछू ए छबि कही न जाए।
पेच दिए कई विध के, हिरदे सों चित्त ल्याए।।५३ ।।

श्री राजजी महाराज ने लाल रंग की पाग लटकती हुई बांधी है जिसकी शोभा कही नहीं जाती। उन्होंने पाग बांधते समय कई तरह की कारीगरी और दिल में प्यार भरकर बिद्ध-बिद्ध के लपेट देकर बांधी है।

Nijanand App

पाग बनाई कोई भांत की, बीच में कटाव फूल।
बीच बेली बीच कांगरी, रूह देख देख होए सनकूल।।५४ ।।

पाग कुछ इस तरह की बंधी है कि उसके बीच कई तरह के कटाव, फूल, बेलें और कांगरी की शोभा बन जाती है, जिसे रूहें देखकर बहुत खुश होती हैं।

जो आधा फूल एक पेच में, आवे दूजे पेच का मिल।
यों बनी बेल फूल पाग की, देख देख जाऊं बल बल।।५५ ।।

एक लपेट में आधे फूल की शोभा आती है, जो पूरे लपेट में पूरी हो जाती है। इस तरह से पाग में बेलें और फूल बने हैं, जिसे देख-देखकर बलिहारी जाती हूं।

कई रंग नंग फूल पात में, ए जिनस न आवे जुबांए।
न आवे मुख केहेनी मिने, जो रूह देखे हिरदे माहें।।५६ ।।

एक फूल और पत्ते में, जो पाग में बने हैं कई तरह के रंग और नग झलकते हैं, जिनकी बनावट जबान से कहने में नहीं आती। यह रूह अपने दिल में विचार करके ही देख सकती है।

पाग बांधी कोई तरह की, जो तरह हक दिल में ल्याए।
बल बल जाऊं मैं तिन पर, जिन दिल पेच फिराए।।५७ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने दिल में खास तरह से पाग को लपेट फिराकर बांधी है। मैं उस पर वारी-वारी जाती हूं।

पाग ऊपर जो दुगदुगी, ए जो बनी सब पर।
जोत हीरा पोहोंचे आकास लों, पीछे पाच रहे क्यों कर।।५८ ।।

पाग के ऊपर सुन्दर दुगदुगी शोभा देती है। जिसमें जड़े हीरे और पाच के नग आकाश तक शोभा देते हैं।

मानिक तहां मिलत है, पोहोंचत तित पुखराज।
नीलवी तो तेज आसमानी, उत पांचों रहे बिराज।।५९ ।।

मानिक, पुखराज और नीलवी के यह पांचों रंग आसमान तक झलकते हैं।

कांध पीछे केस नूर झलके, लिए पाग में पेच बनाए।
गौर पीठ सुध सलूकी, जुबां सके ना सिफत पोहोंचाए।।६० ।।

कंधे के पीछे पीठ पर घुंघराले बालों का नूर झलकता है। उन्हीं के अनुसार पाग के लपेट दिए हैं। पीठ सुन्दर गोरे रंग की है और अति शोभा दे रही है, जिसकी सिफत जबान से वर्णन नहीं हो सकती।

कण्ठ खभे दोऊ बांहोंड़ी, पेट पांसली बीच हैड़ा।
रूह मेरी इत अटके, देख छबि रंग रस भर्‌या।।६१ ।।

गले में बांहों और खंभे, पेट, पसली और छाती की छवि को देखकर मेरी रूह अटक जाती है।

मच्छे दोऊ बाजूअ के, सलूकी अति सोभित।
रंग छब कोमल दिल की, आसिक हैड़े बसत।।६२ ।।

बाहों के मच्छ (डौले) सुन्दर शोभा देते हैं, जिनके रंग, छवि और कोमलता आशिक के दिल में बस जाती है।

Nijanand App

हस्त कमल की क्यों कहूं, पोहोंचे हथेली कई रंग।
लाल उज्जल रंग केहेत हों, इन रंग में कई तरंग।।६३।।

श्री राजजी महाराज के हस्त कमल का कैसे वर्णन करूं? पोहोंचा और हथेलियों में कई रंग हैं। वैसे लाल और उज्ज्वल रंग बताती हूं, परन्तु इन रंगों में कई तरह की तरंगें झलकती हैं।

कोनी काड़े कलाइयां, रंग नरमाई सलूक।
ऐसा सखत मेरा जीवरा, और होवे तो होए टूक टूक।।६४।।

कोहनी, काड़ा, (जहां चूड़ा पहनते हैं), कलाइयों के रंग नरमाई और सलूकी सुन्दर शोभा देती है। मेरा जीव इतना कठोर हो गया कि ऐसा वर्णन करते समय टुकड़े-टुकड़े नहीं हो जाता।

ना तेहेकीक होवे रंग की, ना छबि होए तेहेकीक।
क्यों कहूं बीसों अंगुरियां, और मिहीं हथेलियां लीक।।६५।।

न रंग की और न ही छवि की शोभा वर्णन करने में आती है, तो फिर हाथ और पांवों की बीस उंगलियों और हाथ की हथेलियों की रेखाओं का वर्णन कैसे करूं?

नरम अंगुरियां पतली, लगें मीठी मूठ वालत।
ए कोमलता क्यों कहूं, जिन छबि अंगुरी खोलत।।६६।।

श्री राजजी महाराज अपनी पतली उंगलियों की मुट्ठी बांधकर हिलाते हैं। जब फिर मुट्ठी खोलते हैं तो उसकी कोमलता का बयान कैसे करूं?

क्यों देऊं निमूना नख का, इन अंगों नख का नूर।
देत न देखाई कछुए, जो होवे कोटक सूर।।६७।।

उंगलियों के नखों का नमूना कैसे बताऊं? क्योंकि इन सभी अंगों का नूर नख ही हैं, जिनके सामने करोड़ों सूर्य कुछ भी दिखाई नहीं देते।

अब देखो पेट पांसली, और लांक चलत लेहेकत।
ए सोभा सलूकी लेऊं रूह में, तो भी उड़े न जीवरा सखत।।६८।।

पेट की पसली और पीठ की गहराई को चलते समय देखो तो इस सलूकी और शोभा को अपने दिल में बसा लेने की इच्छा होती है। फिर भी यह मेरा जीव संसार में ऐसा कठोर हो गया है कि ऐसी सुन्दर शोभा को बयान करते नहीं उड़ता।

देख हरवटी अति सुन्दर, और लाल गाल गौर।
लांक अधुर बीच हरवटी, क्यों कहूं नूर जहूर।।६९।।

मुख की ठोड़ी, लाल गाल, होंठ और ठोड़ी के बीच की गहराई के गोरे रंग का बयान कैसे करूं?

गाल सोभा अति देत हैं, क्यों कहूं इन मुख छब।
उज्जल लाल रंग सुन्दर, क्यों कहूं सलूकी फब।।७०।।

श्री राजजी महाराज के गाल उज्ज्वल लाल रंग के सुन्दर शोभा देते हैं। ऐसे श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की छवि और सलूकी जो मेरे दिल को चुभ रही है, कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

कानन की किन बिध कहूं, जो सुने आसिक के बैन।
सो सुन देवें पड़उत्तर, ज्यों आसिक पावे सुख चैन।।७१ ।।

श्री राजजी महाराज के कानों की हकीकत कैसे बताऊं जो आशिक मोमिनों के वचनों को सुनते हैं और सुनकर उत्तर देते हैं जिससे आशिकों को सुख होता है।

मुख दंत लाल अधुर छब, मधुरी बोलत मुख बान।
खैंच लेत अरवाह को, ए जो बानी अर्स सुभान।।७२ ।।

मुखारबिन्द, दांत और लाल होठों की छबि बोलते समय बड़ी सुन्दर लगती है। श्री राजजी महाराज के मीठे वचन रूह को खींच लेते हैं।

नैन अनियारे बकी छब, चंचल चपल रसाल।
बान बंके मारत खैंच के, छाती छेद निकसत भाल।।७३ ।।

श्री राजजी महाराज के नैन नुकीले, चतुराई युक्त और रसीले हैं, जिनकी बहुत सुन्दर छबि है। जब श्री राजजी महाराज अपनी तिरछी नजर से देखते हैं तो उनके आशिकों की छाती में चुभ जाते हैं (आशिक तड़प जाते हैं)।

लाल तिलक निलवट दिए, अति सुन्दर सुखदाए।
असल बन्या ऐसा ही, कई नई नई जोत देखाए।।७४ ।।

माथे (मस्तक) पर लाल रंग का तिलक सुन्दर सुखदायी शोभा देता है। वह तिलक अंग में ही बना है और सदा नए-नए तेज से भरा दिखाई देता है।

नैन कान मुख नासिका, रंग रस भरे जोवन।
हाथ पांउं कण्ठ हैयड़ा, सब चढ़ते देखे रोसन।।७५ ।।

श्री राजजी महाराज का मुख, नैन, कान, नासिका, हाथ, पांव, कंठ और छाती सब जवानी के रस में एक-दूसरे से चढ़ते ही दिखाई देते हैं।

नख सिख बन्ध बन्ध सब अंग, मानों सब चढ़ते चंचल।
छब फब सोभा सुन्दर, तेज जोत अंग सब बल।।७६ ।।

श्री राजजी महाराज के नख से शिखा तक सभी अंग चंचल और चढ़ती शोभा से भरे हैं। उनके सभी अंगों का तेज, जोत, बल और छबि सब सुन्दर शोभायमान हैं।

सुन्दर ललित कोमल, देख देख सब अंग।
तेज जोत नूर सब चढ़ते, सब देखत रस भरे रंग।।७७ ।।

सभी अंग देखने में अच्छे व कोमल लगते हैं जिनका तेज मस्ती से भरा चढ़ता-चढ़ता दिखाई देता है।

कटि कोमल दिल हैयड़ा, अति उज्जल छाती सुन्दर।
चढ़ते इस्क अंग अधिक, ऐसा चुभ्या रूह के अंदर।।७८ ।।

श्री राजजी महाराज की कमर, दिल, छाती, उज्ज्वल और कोमल हैं। इनमें इश्क से चढ़ती मस्ती रूह के दिल में चुभ जाती है।

Nijanand App

इतथें रूह क्यों निकसे, जो इन मासूक की आसिक।
छोड़ छाती आगे जाए ना सके, मार डारत मुतलक।।७९ ।।

जो श्री राजजी महाराज की रूहें हैं वह अपने माशूक के इन अंगों को छोड़कर कैसे निकल सकती हैं। छाती की शोभा तो ऐसे है कि बेशक रूहें उसको देखकर घायल हो जाती हैं।

जिन बिध की ए इजार, तापर लग बैठा दावन।
सेत रंग दावन देखिए, आगूं इजार रंग रोसन।।८० ।।

श्री राजजी महाराज की इजार इस तरह की है कि उसके ऊपर सफेद रंग के जामे का दावन (घेरा, नीचे का हिस्सा) आया है। उस दावन को देखने से नीचे की इजार झलकती है।

गौर रंग जामा उज्जल, जुड़ बैठा अंग ऊपर।
अति बिराजत इन विध, ए खूबी कहूं क्यों कर।।८१ ।।

श्री राजजी महाराज के गोरे रंग के ऊपर सफेद जामा अंग से लगा है, जिसकी सुन्दरता कैसे कहूं?

ए जुगत जामें की क्यों कहूं, झलकत है चहुं ओर।
बाहें चोली और दावन, सोभा देत सब ठौर।।८२ ।।

जामे की झलकार चारों ओर फैल रही है। उसकी बांहों की चूड़ियां (चुन्नटें) और घेरे की बनावट अति सुन्दर है। हकीकत कैसे वर्णन करूं?

पीछे कटाव जो कोतकी, रंग नंग जरी झलकत।
चीन मोहोरी दोऊ हाथ की, ए सुन्दर जोत अतन्त।।८३ ।।

जामे की पीठ पर बने भरत में जड़े नग झलक रहे हैं तथा हाथों की मोरी पर चुन्नटें सुन्दर शोभा देती हैं।

बेल नकस दोऊ बगलों, और बेल गिरवान बन्ध।
चूड़ी समारी बाहन की, क्यों कहूं सोभा सनन्ध।।८४ ।।

दोनों बगलों में तथा तनियों के स्थान पर सुन्दर बेलें और नक्शकारी बागे में बनी है और हाथ के ऊपर चुन्नटें बड़े सुन्दर ढंग से बनी हैं। उसकी शोभा का बयान कैसे करूं?

छोटी बड़ी न जाड़ी पतली, सबे बनी एक रास।
उतरती मिहीं मिहीं से, जुबां क्या कहे खूबी खास।।८५ ।।

बागे की चुन्नटें न छोटी, न बड़ी, न पतली और न मोटी हैं। सब ऊपर से नीचे बारीक से बारीक आई हैं। उसकी खूबी यहां की जबान से कैसे बताएं?

पीला पटुका कमरें, रंग नंग छेडे किनार।
बेल पात फूल नकस, होत आकास उद्दोत कार।।८६ ।।

कमर में पीला पटका बंधा है, जिसके पल्लू और किनारे पर सुन्दर नग जड़े हैं। बेल, फूल और पत्ते की नक्शकारी की जोत आकाश तक फैलती है।

Nijanand App

लाल नीले सेत स्याम रंग, किनार बेल कटाव।
सात रंग छेड़ों मिने, क्यों कहूं जुगत जड़ाव।।८७ ।।

पटके के किनारे की बेल के कटाव में लाल, नीला, सफेद और काला रंग झलकता है और पल्लू पर सात रंग के नगों का जड़ाव अति सुन्दर शोभा ले रहा है।

पाच पाने मोती नीलवी, हीरे पोखरे मानिक नंग।
बेल कटाव कई नकस, कहूं गरभित केते रंग।।८८ ।।

पाच, पन्ना, मोती, नीलवी, हीरा, पुखराज और माणिक के नग बेलें और कटाव और नक्शकारी में जड़े हैं। इनकी तरंगों से कई तरह के रंग दिखाई देते हैं।

जामें में झांई झलकत, हरे रंग इजार।
लाल बन्ध और फुन्दन, कई रंग नंग अपार।।८९ ।।

हरे रंग की इजार की शोभा सफेद रंग के जामे में झलकती है, जिसमें लाल रंग का बन्धन और फुन्दन के रंग और नग बेशुमार शोभा देते हैं।

कहूं अंगों का बेवरा, जुदे जुदे भूखन।
ए जो जवेर अर्स के, कहूं पेहेले भूखन चरन।।९० ।।

श्री राजजी महाराज के अंगों के जुदा-जुदा आभूषणों में अर्श के जवेर जड़े हैं। उनमें से पहले चरणों के आभूषणों का बयान करती हूं।

चारों जोड़े चरन के, नरमाई सुगन्ध सुखकार।
बानी मधुरी बोलत, सोभा और झलकार।।९१ ।।

चरणों के चारों आभूषण झांझरी, घुंघरी, काम्बी और कड़ला के जोड़े अति नरम और सुगन्धित हैं। उनकी सुन्दर आवाज आती है और झलकार होती है।

भूखन मेरे धनी के, किन विध कहूं जो ए।
के कहूं खूबी नरमाई की, के कहूं अम्बार तेज के।।९२ ।।

श्री राजजी महाराज के आभूषणों की सुन्दरता और कोमलता कैसे कहूं? उनका तेज आकाश तक फैलता है।

एक नंग के कई रंग, सोभे झन बाजे झांझर।
पांच नंग रंग एक के, अति मीठी बोले घूंघर।।९३ ।।

एक नग के कई रंग झांझरी में दिखाई देते हैं। पांच नग एक रंग के घुंघरी में सुन्दर आवाज करते हैं।

नाके वाले जवेर के, माहें नरम जोत गुन दोए।
तीसरी बानी माधुरी, चौथा गुन खुसबोए।।९४ ।।

घुंघरी के कुण्डों में जवेर जड़े हैं, जिनमें नरमाई है और तेज भी है। दोनों गुण हैं। तीसरा गुण सुन्दर आवाज का है। चौथा गुण खुशबू का है।

Nijanand App

सोई पांच रंग एक नंग में, तिनकी बनी जो कड़ी।
देत देखाई रंग नंग जुदे, जानों किन घड़ के जड़ी।। ९५ ।।

इसी किस्म से कड़े में एक नग के पांच रंग दिखाई देते हैं। यह सभी रंग और नग अलग-अलग दिखाई देते हैं। ऐसा नहीं समझना कि किसी ने इनको जड़ा है या घड़कर बनाया है।

कांबी एक जवेर की, तामें झीने रंग नंग दस।
दिल चाहे भूखन सब बने, सो हक भूखन ए अर्स।। ९६ ।।

कांबी एक जवेर की है उसमें बारीक नग दस रंग के हैं। इस तरह से श्री राजजी महाराज के आभूषण मन की पसन्द के अनुसार शोभा देते हैं।

मैं देखे जवेर अर्स के, ज्यों हेम भूखन होत इत।
कई रंग नंग मिलाए के, बहु बिध भूखन जड़ित।। ९७ ।।

मैंने परमधाम के जवेरों को देखा और यहां संसार के सोने और आभूषणों को मिलाया। संसार के आभूषणों में कई तरह के रंग के नगों को मिलाकर रंग के अनुसार कई तरह के भूषणों में जड़ते हैं।

किन जड़े घड़े ना समारे, भूखन आवत दिल चाहे।
अर्स जवेर कंचन ज्यों, जानों असल ऐसे ही बनाए।। ९८ ।।

परमधाम के आभूषणों को न किसी ने बनाया है न घड़ा है। यह सब श्री राजजी महाराज की इच्छा के अनुसार शोभा देते हैं। परमधाम के जवेर सोने में बने हैं, ऐसा लगता है।

दस रंग के जवेर की, माहें कई नकस मुंदरी।
दोए अंगूठी अंगूठों, आठों जिनस आठ अंगुरी।। ९९ ।।

दस रंग के जवेर की नक्शकारी की हुई है। दस मुंदरियां हैं। दो अंगूठियां अंगूठों में और आठ तरह की आठ उंगली में शोभा देती हैं।

ए नरम अंगुरियां अतन्त, नख सोभित तेज अपार।
ए देखो भूल अकल की, सोभा ल्याइए माहें सुमार।। १०० ।।

यह उंगलियां अति नर्म हैं। जिनके नख के तेज की शोभा अपार है। यह हंमारी भूल है जो बेशुमार को शुमार में लाकर वर्णन करते हैं।

पोहोंचे और हथेलियां, केहे न सकों सलूकी ए।
छबि देख रंग हाथन की, बल बल जाऊं इनके।। १०१ ।।

पोहोंचे और हथेलियों की सलूकी कही नहीं जा सकती। हाथों के रंगों की छवि को देखकर मैं बलिहारी जाती हूं।

कड़ियां दोऊ काड़ो सोहे, सोभा तेज धरत।
लाल नंग नीले आसमानी, जोत अवकास भरत।। १०२ ।।

हाथों की कलाई में दो कड़े पहने हैं, जिनके लाल और नीले रंग आसमान तक झलकते हैं।

Nijanand App

रूह के दिल में चुभ जाती है।

पोहोंची पांचों नंग की, जुबां केहे न सके जिनस।
पाच पांने मोती नीलवी, लरें हीरे अति सरस।। १०३ ।।

हाथ में जो पोहोंची पहनी है उसमें पांच नग, हीरा, पाच, पन्ना, मोती और नीलवी जड़े हैं, जिनकी सिफत जबान से कही नहीं जाती। इनकी तरंगें आपस में लड़ती हैं।

बाजूबंध की क्यों कहूं, जो बिराजे बाजू पर।
कई मिहीं नकस कटाव, जोत भरी जिमी अम्बर।। १०४ ।।

बाजूबन्ध श्री राजजी महाराज के दोनों बाजुओं पर शोभा देते हैं। जिनमें कई तरह की बारीक नक्शकारी और कटाव हैं। उनकी तरंगें आकाश तक फैलती हैं।

एक नंग एक रंग का, एक रंगे नंग अनेक।
इन बिध के अर्स भूखन, सो कहां लो कहूं विवेक।। १०५ ।।

परमधाम के आभूषणों में एक नग में कई रंग तथा एक रंग में कई नग दिखाई देते हैं। उनका ब्योरा कैसे कहूं?

पांच रंग जरी फुन्दन, सोभा लेत अतंत।
पांच रंग जवेर झलके, फुन्दन सोहे लटकत।। १०६ ।।

बाजूबन्ध की जरी और फुन्दन में पांच रंग शोभा देते हैं। पांच रंग जवेर के झलकते हैं। उनके नीचे फुन्दन लटकते शोभा देते हैं।

नरम जोत खुसबोए, दिल चाही सोभाए।
कई विध सुख लेवें हक के, सुख भूखन कहे न जाए।। १०७ ।।

यह बाजूबन्ध नर्म है और सुगन्धित हैं। दिल में चाहे अनुसार चमक है। श्री राजजी से रूहें सुख लेती हैं तो आभूषणों के सुख कहे नहीं जाते।

बीच हार मानिक का, और हीरों हार उज्जल।
पाच मोती और नीलवी, लसनियां अति निरमल।। १०८ ।।

गले में हीरा, माणिक, पाच, मोती, नीलवी और लसनियां के हार शोभा देते हैं।

और निरमल मांहें दुगदुगी, तामें नंग करत अति बल।
बीच हीरा छे गिरदवाए, जोत आकास किया उज्जल।। १०९ ।।

हारों के बीच दुगदुगी में जड़े नग झलकते हैं। दुगदुगी के बीच में हीरा है। घेरकर छः नग आए हैं जिसकी जोत आकाश तक जाती है।

गौर गलस्थल धनी के, उज्जल लाल सुरंग।
झांई उठे इन नूर में, करन फूल के नंग।। ११० ।।

श्री राजजी महाराज के गाल गोरे रंग के लालिमा लिए हैं। कानों में पहने कर्णफूलों की झांई गालों पर झलकती है।

Nijanand App

निरख नासिका धनी की, लटके मोती पर लाल।
लेत अमी रस अधुर पर, रस अमृत रंग गुलाल।। १११ ।।

श्री राजजी महाराज की नासिका को देखो। नीचे मोती और ऊपर लाल बेसर लटक रहा है। यह बेसर होठों पर लटकने के कारण अमीरस होठों से पीती है। होठों का रंग लाल गुलाल है।

करन फूल की क्यों कहूं, उठत किरन कई रंग।
तिन नंग रंग कई भासत, रंग रंग में कई तरंग।। ११२ ।।

कर्ण फूल का वर्णन कैसे करूं? इनकी किरणों में कई रंग हैं और उनमें नग के रंगों में कई तरह के रंगों की तरंगें दिखाई देती हैं।

करत मानिक माहें लालक, हीरे मोती सेत उजास।
और पाच करत है नीलक, लेत लेहेरी जोत आकास।। ११३ ।।

कर्णफूल में माणिक की लालिमा, हीरा, मोती का सफेद रंग और पाच के हरे रंग की किरणें आकाश तक जाती हैं।

तेज भी मानिक तित मिले, पोहोंचत तित पुखराज।
नीलवी तो तेज आसमानी, रहे रंग नंग पांचों बिराज।। ११४ ।।

माणिक की लाल किरणों में पुखराज की पीली और नीलवी की आसमानी किरणें मिलने से पांचों रंग शोभा देते हैं।

पांच फूल कलंगी पर, उपरा ऊपर लटकत।
कोई ऐसी कुदरत नूर की, लेहेरी आकास में झलकत।। ११५ ।।

पाग में लगी कलंगी में पांच फूल ऊपरा ऊपर लटकते हैं परमधाम के नूर की कुछ शोभा ही ऐसी है कि जिसकी किरणें आकाश तक झलकती हैं।

एता इन कलंगी मिने, एकै हीरे का नूर।
आसमान जिमी के बीच में, मानों कोटक ऊगे बका सूर।। ११६ ।।

कलंगी में एक ही हीरे के नूर की शोभा है। जिसकी आसमान जमीन के बीच प्रचण्ड रोशनी है लगता है करोड़ों सूर्य उदय हो गए हों।

जंग जवेर करत हैं, आसमान देखिए जब।
लरत बीच आकास में, नजरों आवत है तब।। ११७ ।।

जब आकाश की तरफ देखते हैं तो जवेरों की किरणें आपस में जंग करती हैं, ऐसा दिखाई देता है।

कहे महामत अरवा अर्स से, जो कोई आई होए उतर।
सो इन सरूप के चरन लेय के, चलिए अपने घर।। ११८ ।।

श्री महामतिजी मोमिनों से कहते हैं, हे मोमिनो! जो कोई परमधाम से आए हों वह श्री राजजी महाराज के चरणों को हृदय में लेकर अपने घर परमधाम चलो।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ६५० ।।

Nijanand App